REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2018

औरंगजेब सामयिक ब्रज प्रदेश में अमर सिंह, फतेह सिंह व अन्य जाट सरदारों के विद्रोह :एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. नीरज कुमार गौड़
(प्राचार्य) एच के एल कालेज ऑफ ऐजूकेशन,
(सम्बध्द पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़) गुरूहरसहाय, फिरोजपुर. (पंजाब)

प्रस्तावना :

औरंगजेब कालीन ब्रजप्रदेश में जाट शक्ति के प्रमुख केन्द्र मथुरा तथा कोइल सरकार भी थे। इस तथ्य को ध्यान में रखकर महाराजा विशन सिंह को आलमगीर ने मथुरा की फौजदारी के साथ–साथ पांच हजार अतिरिक्त सवार रखने का भी शाही आदेश प्रदान किया।[1] क्योंकि राजा विशन सिंह तथा उसके सेनापति हरीसिंह खांगरोत ही ब्रजप्रदेश के शाही मार्गों की सुरक्षा के लिये जिम्मेदार थे। जिस समय सिनसिनी गढ़ का पतन चरम सीमा पर था उसी समय शाही आदेश के पालनार्थ हरी सिंह ने यमुना नदी के किनारे टप्पल में अपना सैनिक शिविर लगाया क्योंकि वह खैर[2] तथा राठ[3] क्षेत्र के जाट सरदार अमर सिंह की क्रान्तिकारी गतिविधियों पर नियंत्रण लगाना चाहता था।

मुगलों की शक्ति का तीव्र प्रतिरोध करने वाले अमर सिंह ने जनवरी 1690 ई0 से लेकर अगस्त 1690 ई0 तक हरी सिंह खांगरोत के नेतृत्व वाली विशाल सेना का सामना किया। मार्च 1690 ई0 में अमर सिंह के पेशकार बिरजू से भयंकर संघर्ष के बाद राठ किले पर अधिकार कर लिया गया तत्पश्चात हरीसिंह ने कूटनीति का सहारा लेकर मुरसान के नन्दा जाट के भाई ऊदा को राजपूतों के पक्ष में करके उसके माध्यम से मई 1690 ई0 में अमर सिंह के एक पुत्र ने खैर के किले को हरी सिंह खांगरोत को सौंप दिया। खैर के किले के लिये भी राजपूतों तथा जाट शक्ति में भयंकर युद्ध हुआ। खैर किले के आक्रमणों में शाही सेना के हाथों अमर सिंह की माता, भानजा, भतीजा तथा परिवार के अन्य सदस्य आये। हरी सिंह ने खैर तथा राठ की जमींदारी नये सिरे से वितरित की। यह कार्य इसने इस क्षेत्र के नये जमींदारों को अपने पक्ष में करने के लिए किया। अमर सिंह का खैर से लगातार पीछा किया जा रहा था परन्तु वह महावन परगने में जाट क्रान्तिकारियों से जा मिला। इसी समय महाराजा विशन सिंह को खैर तथा राठ क्षेत्र से वापिस बुला लिया।[4]

आलमगीर जानता था कि सिनसिनी विजय में कछवाह सेना का प्रधान कार्य रहा है फिर भी उसने राजा विशन सिंह को इस कार्य का उपयुक्त इनाम नहीं दिया। उसने इस विजय के तुरन्त बाद जाट शक्ति से प्रभावित ब्रजप्रदेश की अन्य गढ़ियों को जीतने के लिये विशन सिंह को नियुक्त किया। इस कार्य के लिये उसे पुराने आश्वासन एवं उपयुक्त धन देकर सैनिकों की नवीन भरती तथा पर्याप्त तैयारी करने का आदेश दिया। तत्पश्चात औरंगजेब ने सिनसिनी विजय में लगाये गये अन्य मुगल अधिकारियों को अपने–अपने स्थान पर जाने का आदेश दिया ब्रजप्रदेश की जाट शक्ति के उन्मूलन के लिये विशन सिंह के सेनापति हरी सिंह खांगरोत ने खैर तथा राठ में जाट सरदार का दमन करने के पश्चात मथुरा वापस आकर अक्टूबर के अन्त तक 52 हजार सैनिकों तथा भारी तोपखाने को एकत्रित किया।[5]

जाट शक्ति के अग्रज जोरावर सिंह की मृत्यु के बाद जाट सरदारों ने जाट शक्ति का नेतृत्व उनके छोटे भाई फतेह सिंह को सौंप दिया। उसने अपनी पींगौरा[6] की गढ़ी को अन्य जाट सरदारों के सहयोग से मजबूत किया। सिनसिनी से निकलकर चूरामन तथा उसके सगोत्री भाई अनीराम ने रसूलपुर नामक गढ़ी में शरण ली तथा शीघ्र ही कठूमर परगना प्रवेश कर राजगढ़[7] तथ राहरी गढ़ियों पर अधिकार कर लिया। सोगर[8] के प्रभावशाली सरदार अचला ने सोगर की रक्षा के लिये एक जाट सैनिक टुकड़ी को संगठित किया तथा उसका

नेतृत्व रूस्तम सोगरिया नामक अल्हड़ जमींदार ने संभाला। राहर[9] नामक गढ़ी में रोरिया सिंह नामक जाट सरदार तैनात था। अवार[10] की गढ़ी में अलिया जाट अपने सशस्त्र साथियों के साथ तैयार था। यह सभी गढ़िया 15 मील के घने जंगल, कॉटेदार झाड़ियों, बानगंगा तथा रूपारेल नदियों की खादरों में बनी हुई थीं। इन सभी गढ़ियों की जाट शक्ति एक दूसरे को सहायता प्रदान करने के लिये बचनबद्ध तथा तैयार थीं। इन सभी को अनीराम तथा चूरामन के गुरिल्ला युद्ध में प्रशिक्षित सैनिकों का पूर्ण सहयोग प्राप्त था। यह सभी गढ़ियॉ अन्न तथा जल भण्डरों से पूर्ण रूपेण सुरक्षित थीं। वेदारबख्त मथुरा में ही रहा तथा इन गढ़ियों पर आक्रमण करने का दायित्व विशन सिंह पर था उसने अपने सेनापति हरी सिंह खांगरोत के साथ मिल इन गढ़ियों पर जनवरी 1691 में आक्रमण की योजना बनायी। उसने अपनी सम्पूर्ण 52 हजार सैनिकों तथा तोपखाने को तीन भागों में विभाजित किया प्रथम भाग को रसद तथा आवश्यक सुरक्षा का दायित्व सौपा गया। द्वितीय भाग को कामां, पहाड़ी तथा अऊ परगनों में उपद्रवकारी आन्दोलनकारियों को नेस्तनाबूत करने का कार्य सौंपा गया तथा तृतीय भाग को अवार एवं सोगर गढ़ियों को जीतने के लिये हरी सिंह खांगरोत के नेतृत्व में रणनीति बनाने का कार्य सौंपा गया। इस प्रकार हरी सिंह खांगरोत को अवार पर आक्रमण करने के लिये भेजा तथा स्वयं सौरव की गढ़ी पर आक्रमण करने के लिये रवाना हुआ।[11]

राजा विशन सिंह कछवाह सेना के साथ सोगर गढ़ी पर अधिकार करने के लिये 6 माह तक घने जंगलों को साफ करके जाट शक्ति के स्वतंत्रता प्रेमी आंदोलनकारियों को खोजने में व्यस्त रहा। लेकिन उसका यह समय व्यर्थ गया। मई 1691 ई0 में कछवाह सेनाओं ने सोगर के गढ़ी पर अधिकार करने के लिये कूटनीति का सहारा लिया। 21 मई 1691 ई0 में छल से ग्रामीण वेश धारण कर कुछ राजपूत सैनिकों ने सोगर की गढ़ी में प्रवेश किया तथा कछवाह सेना ने सोगर गढ़ी के सुरक्षा कर्मी जाट सैनिकों को बंदी बना लिया।[12] सोगर गढ़ी को राजपूतों ने यद्यपि छल से जीता था फिर भी इस छोटी गढ़ी के पतन पर औरंगजेब अत्यधिक प्रसन्न हुआ तथा महाराजा विशन सिंह के मनसब में बृद्धि करके उसे अनेकानेक उपहारों से सम्मानित किया। विशन सिंह ने उग्रसेन कछवाहा को सोगर की जमींदारी का प्रबन्ध सौंपा।

औरंगजेब ने दक्षिण के युद्ध में सहायता देने के लिये वेदारबख्त को वापिस बुला लिया।[13] तथा आमेर नरेश विशन सिंह को ब्रज प्रदेश की जाट शक्ति को खोखला करने के लिये निरंकुश छोड़ दिया। विशन सिंह उच्च मनसब प्राप्त करने एवं अप्रीतम योद्धा के गुणों को प्रमाणित करने के लिये स्वतंत्रता प्रेमी स्वजातीय बंधुओं के दमन में लगा रहा।

ब्रजप्रदेश में इस समय औरंगजेब की रणनीति सफल दिखाई दे रही थी क्योंकि उसने जाट शक्ति को दूसरी हिन्दू शक्ति कछवाह राजपूत फौज से काटना प्रारम्भ कर दिया था। इस समय जाट शक्ति का नेतृत्व फतेह सिंह के हाथों में था। वह गुरिल्ला युद्ध के माध्यम से कछवाहों की सेना को निरन्तर प्रताड़ित कर रहा था। जाट शिरोमणि ब्रजराज के परिवार ने बयाना के अंग क्षेत्र में एक छोटी से गढ़ी में अपनी कार गुजारियॉ दिखायीं। यह सभी जाट सरदार आवश्यकतानुसार जाट शक्ति को एकता व दृढ़ता प्रदान कर रहे थे।[14] 1691 ई0 मध्य से जाट शक्ति के मित्रों ने मुगल सम्राट के प्रतिनिधि विशन सिंह कछवाह द्वारा विजित क्षेत्र में लूटमार तथा आंदोलनकारी गतिविधियों का संचालन प्रारम्भ कर दिया इसमें बरोड़ा गढ़ी के सरदार कान्हा रूरूका, बलाही जमींदार प्रताप सिंह, इन्दौली का सरदार सबल सिंह तथा सीकरी[15] के विदोही मेवों ने कामां, पहाड़ी परगनों में अपनी आतंककारी गतिविधियों से जन जीवन अस्त व्यस्त कर दिया। इन्होंने पान्होरी के थानेदार को मारकर कस्बे में भयंकर लूटपाट की।[16] इसी क्रम में जाट शक्ति के तात्कालिक संबल फतेह सिंह तथा चूरामन ने इन्हीं लोगों की सहायता से सौंख में एक नवीन गढ़ी का निर्माण कर लूटमार करना प्रारम्भ कर दिया। इसी प्रकार की गतिविधियॉ हिण्डौन परगने में भी पारम्भ हुयी। इन विकट परिस्थितियों में कछवाह नरेश का औरंगजेब के कोप का शिकार बनना पड़ा। इसके अतिरिक्त उसे अपने सेनापति हरी सिंह खांगरोत की योजनानुसार भी चलना पड़ रहा था। आत्यधिक सैनिक साजो–सामान तथा वेतन के लिये भी कछवाह राजा विशन सिंह कर्ज में दबा जा रहा था।

अकबराबाद सूबे का सूबेदार सिपहदार खॉ स्वयं साधनों की कमी के कारण शक्तिहीन था तथा अपने सूबे में क्रान्तिकारी गतिविधियों को नाकाम करने में असफल था। इस समय क्रान्ति की पुजारी जाट शक्ति ने चूरामन के नेतृत्व में आगरा से लेकर धौलपुर तक के शाही मार्ग पर नियंत्रण कर लिया तथा फतेहपुर सीकरी,

बाड़ी एवं रूपबास की जाट गढ़ियों को सुदृढ़ता प्रदान की। इस समय चूरामन की इन कार्यवाहियों ने आर्थिक तंगी की मार झोल रहे आंदोलनकारियों को बड़ी सहायता पहुंचायी।

चूरामन ने अपनी शक्ति तथा साहस के बल पर 1691 ई0 में मीर मुहम्मद खां तूरानी[17] को धौलपुर के समीप चंबल पार करते हुये लूटा। पीर मुहम्मद के पीछा करने पर चूरामन ने गोली से मार दिया तथा इससे बड़ी मात्राा में सैनिक प्रसाधन प्राप्त किया।[18] जिसका प्रयोग आमेर नरेश विशन सिंह कछवाह के विरूद्ध जाट शक्ति के संघर्षों में किया गया। आमेर नरेश विशन सिंह सिंह कछवाह जो जाट शक्ति को केवल 6 माह में कुचलने का वचन अपने अज्ञानवश औरंगजेब आलमगीर को दे चुका था, को अवार गढ़ी पर अधिकार करने में 10 माह का समय लगा। अवार गढ़ी आभियान हरी सिंह खांगरोत के नेतृत्व में जून 1691 ई0 में प्रारम्भ हुआ। अवार गढ़ी की जाट शक्ति का नेतृत्व सिनसिनी बंशजों के अलिया तथा राजाराम नामक जाट सरदारों ने किया। इसकों फरवरी 1692 ई0 में विजित किया जा सका। जब दक्षिण में व्यस्त औरंगजेब के पास अवार गढ़ी के पतन का समाचार पहुंचा तो वह अत्याधिक प्रसन्न हुआ था पारितोषिक के रूप में राजा विशन सिंह के घटे हुये मनसब में पुनः बढ़ोत्तरी कर दी एवं इसी क्रम में हिण्डौन तथा बयाना परगना भी प्रदान किया। हरी सिंह खांगरोत को भी सिरोपा भेजकर सम्मानित किया गया विशन सिंह ने अवार की जमींदारी रूद्रमन कछवाह को प्रदान की।[19]

ब्रजप्रदेश की कुछ प्रमुख जाट गढ़ियों के पतन के बाद भी इस क्षेत्र में शांति सम्भव नहीं हो सकी क्योंकि जाट सरदारों ने संगठित होकर गुरिल्ला युद्ध छेड़ दिया। इस प्रकार लक्ष्मणगढ़, नगर, बयाना, हिण्डौन, भुसावर के पहाड़ी बीहड़ों तथा नदबई के क्षेत्र में राजपूतों ने जाट शक्ति के साथ मिलकर युद्ध किया।[20] स्थिति इतनी भयंकर हो गयी कि अगस्त 1692 ई0 में हिण्डौन तथा बयाना परगनों का फौजदार कमालुदीन खां अपने क्षेत्र में इस विद्रोह को दबाने में असफल रहा। उसकी शक्ति हीनता को देखते हुये औरंगजेब ने इसके मनसब में 500 जात की वृद्धि कर दी जिससे उसे शक्ति तथा साधन प्राप्त हो सके।

अवार की गढ़ी में जाट शक्ति के पराजित होने के पश्चात कसौट पर आक्रमण किया गया तथा सितम्बर 1692 ई0 में इस पर कछवाह नरेश ने अधिकार कर लिया। इसके बाद पींगौर की गढ़ी का घेरा डाला गया। इस गढ़ी में शक्ति का नेतृत्व फतेह सिंह स्वयं कर रहा था। छुट–पुट युद्धों के पश्चात अन्त में अक्टूबर 1692 ई0 में पीगौंर की गढ़ी पर कछवाह सेनापति ने अधिकार कर लिया। पींगौर के पतन के पश्चात फतेह सिंह ने स्वयं को काका चूरामन की सौख–गूजार गढ़ी में सुरक्षित किया। हरी सिंह खांगरोत ने पींगौर की शक्तिशाली गढ़ी में अपनी सैनिक छावनी एवं अपना निवास स्थान बनाया। महाराजा विशन सिंह ने हरी सिंह के पुत्र गज सिंह को पींगौरा का थानेदार नियुक्त किया।[21]

मुगल सम्राट औरंगजेब ने पुनः ब्रजप्रदेश में शान्ति सुव्यवस्था बनाये रखने के लिये अनेक परिवर्तन किये परन्तु विशेष लाभप्रद नहीं रहे। उसने मई 1692 ई0 में महामद खॉ के मनसब में वृद्धि करके मेवात क्षेत्र में क्रान्तिकारियों के मित्र कान्हा नरूका राजपूत तथा अन्य उपद्रवी तत्वों को दण्डित करने का आदेश दिया।[22] कछवाह राजा विशन सिंह को को हिण्डौन तथा बयाना परगनों की फौजदारी प्रदान कर वहॉ शांति सुव्यवस्था बनाये रखने का सख्त आदेश दिया। इकदात खॉ के मनसब में वृद्धि करके उसे आगरा का सूबेदार तथा आगरा परगने का फौजदार नियुक्त किया।[23] जिससे वह जाट शक्ति के नये पुष्प चूरामन की गतिविधियों पर अंकुश लगा सके। पींगोर अभियान में भटावली गढ़ी[24] ने गुरिल्ला युद्ध के संचालन में जाट शक्ति की अधिक सहायता पहुचायी थी। अतः उसे नष्ट करना परमावश्यक था। जाट शक्ति का दमन औरंगजेब राजपूतों द्वारा ही कराना चाहाता था। इसलिये राजा विशन में नवीन जोश प्रदान करने के लिये उसके मनसब में 500 जात एवं सवार की वृद्धि की गयी। महाराजा विशन सिंह ने अनेक विरोधी विचारधाराओं के बाद भटावली की गढ़ी की ओर प्रस्थान किया। कछवाह फौज को बढ़ता हुआ देखकर जाट आंदोलनकारियों ने अपनी शक्ति को संगठित कर एक जाट टुकड़ी भटावली के रक्षार्थ भेजी इसके बाद चूरामन तथा फतेह सिंह ने जाट शक्ति के क्रान्तिवीरों के साथ नदवई, कठूमर तथा सौंखर सौंखरी के परगनों में प्रवेश कर इस क्षेत्र की जनता से शक्ति बल पर खिराज वसूल किया।[25] कछवाह सेनापति हरीसिंह ने चूरामन तथा फतेह सिंह की उपद्रवकारी गतिविधियों से त्रस्त क्षेत्र में प्रवेश किया तत्पश्चात सौंखर गुर्जर[26] गढ़ी को घेर लिया। फतेह सिंह तथा चूरामन ने जमकर संघर्ष किया किन्तु उन्हें साधनों के अभाव में अपने परिवार के साथ रूपबास तथा बयाना के जंगलों में सुरक्षित पीछे हटना

पड़ा। फतेह सिंह तथा चूरामन के मैदान छोड़ने पर राजपूत सेना ने 9 जनवरी 1693 ई0 में गढ़ी को घेर लिया तत्पश्चात अधिकार कर लिया। इस गढ़ी के पतन में लगभग 600 क्रान्तिकारी खेत रहे।[27] सौखगूजरी गढ़ी पर अधिकार करने के बाद भठावली की और कदम बढ़ाये गये किन्तु बीच में रायसीस[28] की गढ़ी को छुटपुट संघर्ष के पश्चात 4 फरवरी 1693 में अधिकार कर लिया गया। इस समय राजपूत सेनापति हरी सिंह खांगरोत तथा राजा विशन सिंह अपनी इन विजयों से अधिक उत्साहित लग रहे थे। इसी उत्साह के साथ निर्दोष जाट शक्ति के क्रान्तिकारियों की हत्या कर के हरी सिंह खांगरोत ने शीघ्र ही बनी[29] नामक स्थान पर अधिकार कर लिया। तत्पश्चात साधन हीन कुछ जाट विद्रोहियों को जनवरी के प्रथम सप्ताह में हराकर भटावली की गढ़ी पर भी सुदृढ़ता से अधिकार कर लिया।[30]

कछवाह सेना ने योजनाबद्ध रूप से एक–एक करके आधुनिक भरतपुर, कुम्हेर, डीग, नदबई, तथा नगर तहसीलों की समस्त जाट गढ़ियों पर अधिकार कर लिया। परन्तु इन गढ़ियों पर राजपूत मुगलों के अधिकार के पश्चात भी जाट क्रान्तिवीर हताश नहीं हुये तथा यहॉ से निकलकर ब्रज प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में उनका आंदोलन प्रगति पर रहा। जाट गढ़ियों की सुरक्षा को सुव्यवस्थित करने के बाद राजा विशन सिंह ने जाट शक्ति के राजपूत मित्रों को दण्डित करने का कार्य प्रारम्भ किया तथा सर्वप्रथम बरोड़ की गढी के लिये डेढ़ महीने तक कान्हा सिंह नरूका तथा अन्य सरदारों से संघर्ष किया तत्पश्चात 1693 में गढ़ी को विजित कर लिया गया।[31]

जाट शक्ति के मित्र राजपूत केसर गढ़ी के सरदार हरकिसन चौहान ने सौंखर–सौंखरी[32] के क्षेत्र में आंदोलन कर दिया तथा इसकी उपद्रवकारी गतिविधियों में अन्य जाट सरदारों ने सहयोग दिया। जून 1693 ई0 में गढ़ी केसरा के समीप एक मुठभेड़ में जाट शक्ति का यह मित्र हर किसन चौहान खेत रहा। इस प्रकार गढ़ी केसरा पर भी राजपूत सेना ने अधिकार जमा लिया।[33]

राजा विशन सिंह को हिण्डौन तथा भुसावर परगनों की फौजदारी इसी उद्देश्य से औरंगजेब ने प्रदान की थी कि वह इस क्षेत्र में जाट राजपूतों की विद्रोही गतिविधियों पर अंकुश लगा सके तथा नियमित रूप से राजस्व वसूल कर मुगल खजाने में पहुंचा सके। परन्तु यह क्षेत्र रण सिंह पंवार एवं जाट सरदारों की गतिविधियों के कारण अशान्त था। गढ़ी केसरा की विजय के बाद इस क्षेत्र को स्वतंत्रता प्रेमी जाट एवं जादौन राजपूतों से मुक्त कराने का प्रयास किया। जाट सरदारों तथा रणसिंह पंवार ने झारौटी[34] के जंगलों में शरण ली। हरी सिंह खांगरोत ने इन जंगलों को पूर्ण रूप से साफ कराकर विद्रोहियों के दमन का प्रयास किया किन्तु उसे अधिक सफलता प्राप्त नहीं हुई। स्वतंत्रता प्रेमी आंदोलनकारियों ने झरौटी से निकलकर बाराह[35] के जंगलों में शरण ली। कछवाह सेनापति हरी सिंह खांगरोत ने इस जंगल को घेरकर सितम्बर 1693 में बाराह तथा सौदपुर की गढ़ियों पर अधिकार कर लिया।[36]

इसी प्रकार ब्रज प्रदेश के केन्द्र बिन्दु मथुरा परगने में चूरामन तथा अन्य स्वतंत्रता प्रेमी क्रान्तिवीरों ने रारह[37] के क्षेत्र में क्रान्ति की चिन्गारियां फैला दीं। कछवाह सेनापति के आदेशनुसार गजसिंह ने छापा मार जाट सिपाहियों से संघर्ष कर सितम्बर 1693 ई0 में रारह की गढ़ी को विजित कर लिया।[38]

कछवाह सेनायें राजपूत क्रान्तिकारी रणसिंह पंवार के पीछे निरन्तर लगी रही। बाराह गढ़ी के पतन के उपरान्त पंवारों को अक्टूबर के मध्य में खैरोरा[39] गढ़ी को भी छोड़ना पड़ा। त बवह मांदरोल की पहाड़ियों में चला गया। कछवाहों ने महुआ नामक गढ़ी पर अधिकार के बाद नवम्बर 1693 के बन्त में मातन तथा माइन नामक जाट गढ़ियों पर भी अधिकार कर लिया। इन गढ़ियों की रक्षा में लगे कई स्वतंत्रता प्रेमी जाट सरदार खेत रहे। कछवाह सेनापति हरीसिंह की इन कार्यवाहियों से प्रसन्न होकर औरंगजेब ने उसे भुसावर तथा हिण्डौन का नायब फौजदार बना दिया तथा राजा विशन सिंह को बयाना परगने की फौजदारी भी प्रदान की।[40]

आगरा के सूबे में अभी भी अराजकता का वातावरण था। धौलपुर तथा बाड़ी परगने के निवासी स्वतंत्र आचरण कर रहे थे। सिकन्दरा तथा ताजमहल की देख–रेख में लगे गांवों ने कई वर्षों से राजस्व अदा नहीं किया था। जगनेर[41] उस समय प्रमुख जाट शक्ति के गढ़ के रूप में उभर रहा था। फतेहपुर सीकरी में जाट शक्ति ने नवीन सैनिकों का संगठित दल तैयार किया तथा ब्रज मण्डल के जाटों ने आगरा तथा मथुरा में चिकसाना[42] तथा चैकोर[43] में गतिविधियों का संचालन किया। आगरा के सूबेदार शाइस्ता खॉ की मृत्यु होने पर अप्रैल 1694 ई0 में स्वालिह खॉ को फिवाई खॉ का खिताब देकर आगरा का सूबेदार बनाया गया। उसने आगरा

के आस–पास के क्षेत्रों की अराजकता पूर्ण स्थिति को देखकर शाही आदेश द्वारा महाराजा विशन सिंह को इन विद्रोहों या आन्दोलनकारियों को नेस्तनाबूत करने के लिये नियुक्त करवा लिया।[44]

सिनसिनी, अवार, सोगर तथा शरह के पतन के बाद क्रान्तिकारी जाट शक्ति ने चैकोरा गांव को अपना बनाया तथा चाहर गोत्री जाटों की सहायता से विप्लवकारी गतिविधियों में भाग लिया। राजा विशन सिंह तथा सेनापति हरी सिंह ने फरवरी 1694 से जाट शक्ति के प्रमुख केन्द्र चैकोर, दूरा[45],अरहेरा [46],कागारोल [47] , सेपऊ तक जाट शक्ति के प्रमुख आंदोलनकारियों चूरामन, अनीराम, बुकना इत्यादि सरदारों की व्यापक खोज की इसके पश्चात सरसेज[48] तथा बड़गांव[49] को भी विशाल सेना के साथ घेर लिया। फरवरी 1694 से मार्च 1694 तक कछवाह फौजों ने लगभग 500 स्त्री पुरूष तथा अवार के जाट सरदार अलिया के पुत्र नन्दराम को बन्दी बनाया। नन्दराम को आगरा कोतवाली के चबूतरे पर विशाल यातनायें देकर कत्ल कर दिया गया। कछवाह सेनापति कांगारोल की ओर बढ़ा परन्तु आंदोलनकारी जाट सरदार इतनफर की ओर चले गये।[50]

राजा बिशन सिंह को सूचना प्राप्त हुयी कि जाट सरदारों तथा स्थानीय सरदारों ने बयाना, टोडाभीम एवं इसके आस–पास के क्षेत्रों में क्रान्तिकारियों ने अराजकता की स्थिति उत्पन्न कर दी है। यह ज्ञात होते ही उसने प्रहलाद सिंह के नेतृत्व सैनिक टुकड़ियों को रवाना किया। दो महीने के अथक प्रयासों के फलस्वरूप अप्रैल 1694 के प्रथम सप्ताह में सुन्दरमन गूर्जर तथा बनवाड़ी[51] के सुक्का जाट सरदार को बन्दी बनाया गया तत्पश्चात यह राजपूत टुकड़ी क्षेत्र में शांति स्थापित होने पर चैकोर वापिस आ गयी।[52]

ब्रजप्रदेश की जाट शक्ति के प्रमुख जाट सरदार अपना निरन्तर पीछा होने के कारण रतनपुर चले गये थे। यहॉ चम्बल नदी की बीहड़ रवादर, भीषण जंगल तथा मार्गहीन पहाड़ों की तलहटियों पर शरण लिये हुये थे। रतनपुर क्षेत्र कल्याण सिंह भदौरिया के परगने के अन्तर्गत आता था। वह इन विद्रोहियों को दबाने में पूर्णरूप से असमर्थ था तब अकबराबाद के सूबेदार स्वालिह खां उर्फ फिदाई खां ने कल्याण सिंह तथा हरीसिंह दोनो को आगरा बुलाया। तत्पश्चात विचार विमर्श के बाद कल्याण सिंह ने जाट शक्ति के दमन के लिये अपने क्षेत्र में हरी सिंह को स्वीकृति दे दी।[53]

कल्याण सिंह भदौरिया के साथ अप्रैल 1694 ई0 में चौकौर गढ़ी से कछवाह सेना को खोरसा[54] की ओर प्रस्थान का आदेश दिया गया। फौजों ने खोरसा की गढ़ी को घेर लिया तत्पश्चात जाट शक्ति के साथ उनका भयंकर युद्ध हुआ। परिणामस्वरूप हरी सिंह खांगरोत ने खोरसा की गढ़ी पर अधिकार कर लिया। इस पूरी कार्यवाही में 270 आंदोलनकारी खेत रहे तथा अन्य बन्दी बनाये गये। सेनापति हरी सिंह ने गुप्त सूचना के आधार पर मौजा शीश मण्डी, परगना खनुआ की ओर सेना के साथ शीघ्रता से पंहुचा। सूचना सही थी परन्तु जाट शक्ति के सरदारों ने मिकांडा[55] के जाटों के यहॉ शरण ली। कछवाह सेनापति ने निरन्तर पीछा करते हुये मिकांडा को घेर लिया। यहॉ भी कछवाह सेनापति निराश रहा क्योंकि प्रमुख जाट निरन्तर विप्लवकारी स्थिति पैदा करते हुये उसकी पंहुच से बाहर ही रहे।[56]

कछवाह सेनापति हरी सिंह के मिकांडा पहुंचने से पहले ही ब्रजप्रदेश के स्वतंत्रता आंदोलन के बेनामी सरदार भरतपुर के घने जंगलों में स्थित जाट प्रधान गांव वछामदी[57] अंदेरा[58] तथा चिकसाना[59] में पहुंच गये। हरीसिंह ने यहॉ पर विद्रोही जाटों को चारों ओर से घेरने के लिये फरह[60] के थानेदार रूपसिंह, ओल[61] के थानेदार लहरीदास और पींगौरा छावनी से गलसिंह को अपनी–अपनी टुकड़ियों के साथ सजगता से बढ़ाने का आदेश दिया तथा स्वयं ने मिकांडा से प्रस्थान किया। जाट सरदारों को एक माह अप्रैल–मई 1694 ई0 का घेरा कठिन लगने लगा तब सेनापति हरीसिंह के चिकसाना पहुंचने पर भयंकर युद्ध प्रारम्भ हुआ। इस युद्ध में अधिकता के कारण राजपूतों ने जाट किसानों के बाल बच्चों को कैद करके कत्ल कर दिया।[62] प्रमुख जाट सरदार इस बार भी घेरा तोड़ कर सकुशल निकल गए। सेनापति हरीसिंह 15 मई 1694 को तत्परता से खानुवा छावनी पहुंचा तथा कल्याण सिंह भदौरिया के साथ विचार करके रतनपुर पर आक्रमण करने के लिये सेना के साथ खानुवा–बयाना शाही मार्ग पर आगे बढ़ा।

जाट शक्ति की गुप्त सूचनाओं का स्रोत इतना दृढ़ था कि उसे कछवाह राजा एवं उसके सेनापति की प्रत्येक योजनाओं की जानकारी प्राप्त हो रही थी। महाराजा विशन सिंह ने जाट शक्ति के प्रमुख सरदारों को घेरने की एक विशाल योजना बनायी। जाट शक्ति को पवरी भाटी के पंवार तथा जांदौ राजपूतों का पूर्ण समर्थन प्राप्त था। जाट शक्ति के सरदारों को कछावाहों के रतनपुर अभियान की जानकारी प्राप्त हो गयी

तथा उन्होंने रतनपुर[63] अभियान को असफल बनाने के लिये जगनेर तथा मांदरेल के जाट–राजपूतों ने अभेद्य रणनीति तैयार की। जाट शक्ति एवं राजपूतों की मित्रता एवं उनकी योजनाओं की जानकारी कछवाह सेनानायक को मिल गयी। उसने तत्काल रतनपुर योजना को स्थापति कर दिया। बड़गांव[64] में एकत्रित हुये जाट क्रान्तिकारियों पर केवल अपनी टुकड़ी के सहारे मई 1694 ई0 में आक्रमण कर दिया। बड़गांव में जाट क्रान्तिकारियों को अकेले हरीसिंह की राजपूत टुकड़ी ने सशक्त टक्कर दी। जाट शक्ति के क्रान्तिकारियों के पास साधनों की कमी होने के कारण उन्होंने रणक्षेत्र छोड़कर जंगलों एवं पहाड़ों पर शरण ली। दूसरे दिन महाराजा विशन सिंह तथा कल्याण सिंह भदौरिया भी अपनी–अपनी सेना के साथ आ गए। जिसके कारण जाट–राजपूत क्रान्तिकारियों ने बडगांव को खाली कर गोगाबाद[65] में नवीन मोर्चा स्थगित किया। गोगाबाद का इलाका केवल पैदल सेना के लिये उपयुक्त था। इसलिये सभी सेनानायकों ने अपनी–अपनी टुकड़ियों के साथ गोगाबाद को घेर लिया। मई 1694 ई0 के मध्य में रिछुआ[66] नामक स्थान पर भयंकर युद्ध हुआ। परिणामतः गोगाबाद पर मुगल कछवाह फौज का अधिपत्य हो गया। इस युद्ध में 2000 से अधिक जाट क्रान्तिकारी अपनी मातृभूमि की रक्षार्थ खेत रहे। इस विजय के बाद भी कछवाह राजा विशन सिंह तथा सेनापति हरी सिंह खांगरोत के समक्ष प्रमुख जाट सरदारों की समस्या यथावत रही क्योंकि वह सभी रतनपुर में अपनी उपस्थिति का आभास दिला रहे थे।[67]

रतनपुर की गढ़ी करौली राज्य की सीमाओं में स्थित थी। यह गढ़ी जादौं राजपूतों की आन व शान थी। यह गढ़ी सुरक्षात्मक दृष्टि से चंबल नदी के उत्तरी कछारों पर घने जंगलों तथा पहाड़ों के मध्य थी। इसकी सुरक्षा के लिये राजपूतों ने अनेक छोटी–छोटी गढ़ियों का निर्माण कराया था। यहॉ का राजा रतनपाल जादौं राजपूतों को रोकने मे सक्षम नहीं था यह गढ़ी राजा कल्याण सिंह भदौरिया की फौजदारी के अन्तर्गत आती थी। बड़गाव एवम् गोगाबाद विजित करने के बाद भी कछवाह राजा जाट क्रान्तिवीर सरदारों को समाप्त नहीं कर पाया था तथा इसी आशा के साथ उसने रतनपुर की ओर प्रस्थान किया। पींगौरा का थानेदार गजसिंह अपनी सैनिक टुकड़ी के साथ आ पहुंचा। जून 1694 के प्रारम्भ में रतनपुर पर आक्रमण किया गया किन्तु राजा विशन सिंह की आशाओं के विपरीत जाट शक्ति के प्रमुख सरदार चंबल नदी के उस पार चले गये। स्वतंत्रता के पुजारी एक स्थान से दूसरे स्थान तक क्रान्ति की चिंगारी फैलाते रहे परन्तु यह अपनी जाति एवं ब्रजप्रदेश के सम्पूर्ण समाज की दृष्टि में उच्च स्थान प्राप्त करते रहे। विशन सिंह ने रतनपुर का चप्पा–चप्पा छाना परन्तु जाट सरदारों के न मिलने पर निराश हुआ तथ वहीं से अपनी सेना के साथ रणथम्भौर में शांति स्थापना का असफल प्रयास किया। अन्ततः अक्टूबर 1694 ई0 में समस्त सेनायें मथुरा छावनी में आ गयीं।[68]

सिनसिनी अभियान के मध्य में खैर तथा राठ गढ़ी के सरदार अमर सिंह के विद्रोह को 1690 ई0 कूटनीति से तोछीगढ़ के नन्दराम[69] नन्दा जाट के भाई ऊंदा को अपने पक्ष में करके हरीसिंह खांगरोत द्वारा समाप्त किया गया। इस कार्य के पुरूस्कार स्वरूप विशन सिंह ने उन्हें वहॉ का स्थायी प्रबन्ध सौंपकर भी भूल की थी। इन्होंने विशन सिंह की अनुपस्थित का लाभ उठाकर संहार परगने में भयंकर लूटमार की तथा ठेनुडा गोत्री समस्त जाट सरदारों को एकत्रित करके स्वाधीनता के लिये प्रेरित किया। उसने मुरसान के पास जावरा[70] गढ़ी का निर्माण कराया और इसकी सुरक्षार्थ गढ़िया बनवायी। नन्दराम के एक भाई बैरीसाल ने स्वयं की हरार[71] में एक गढ़ी बनवायी। इसके आगे जगसेना[72] अथवा जुगसाना, ब्रज बिहारी[73] और करनावल[74] नामक गढ़ी बनवायी गई। नौह[75] गढ़ी के नाहबर जाट सरदारों के साथ महाबन, सादाबाद तथा जलेसर परगनों में भयंकर लूटपाट की। जनवरी 1695 ई0 में हरराम, भगवान, मदन, पानीसिंह आदि जाट सरदारों ने सहपऊ पर चढ़ाई की। तत्पश्चात वहॉ के नागरिकों से जबरन मार–पीट कर 6000 रूपये की सम्पत्ति लूटी। औरंगजेब ने इन सभी विद्रोहियों को नियंत्रण में रखने के लिए 1694 ई0 में आगरा जिले में कल्याण सिंह भदौरिया तथा नबम्बर 1694 ई0 में आमेर राजा विशन सिंह को नन्दराम का दमन काने का शाही आदेश प्रदान किया।[76]

1694–95 में भयंकर दुर्भिक्ष के बावजूद राजा विशन सिंह कछवाह ने दिसम्बर 1694 ई0 में महावन परगने में अपनी सैनिक छावनी स्थापति की तथा हरीसिंह खांगरोत ने पंजागन[77] नामक स्थान पर संरक्षित सैनिक तथा खाद्यान्न भण्डार तैयार कराया ताकि आवश्यकतानुसार खाद्यान्न तथा सैनिक सामग्री उपद्रवियों से बचाकर आसानी से पहुंचाई जा सके। हरीसिंह खांगरोत ने महावन से जावरा तक गढ़ियों के समानान्तर नवीन गढ़ियों का निर्माण कराया तथा जमींदारों का विरोध करने पर भी नोह के विद्रोही गांवों को निर्दयतापूर्वक

उजाड़ा ताकि भविष्य में वहॉ किसी भी प्रकार की अराजकता पैदा न हो सके। फरवरी 1695 ई0 में महावन से सेना ने जाटों के प्रमुख शस्त्रागार अनोड़ा गढ़ी की ओर प्रस्थान किया तथा इसे चारों ओर से घेरने के लिये इसके चारों ओर खेतों में खड़ी फसल बर्बाद कर दी गयी। जाटों ने अनोड़ा गढ़ी को एक रात्रि में तत्परता से खाली कर दिया। कछवाह सेनाओं ने बैरीसाल तथा किहरारी के अतिरिक्त अन्य गढ़ियों को छूट–पुट संघर्ष के बाद हस्तगत कर लिया। कछवाह सेना धीरे–धीरे जावरा की ओर बढ़ी तथा उसने मार्च 1695 ई0 के प्रथम सप्ताह में वहॉ घेरा डाल दिया। जाट शक्ति तथा कछवाह फौजों में 15 मार्च 1695 को मुठभेड़ हुई। दोपहर बाद जाट अपनी गढ़ियों में चले गये तथा उन्होंने वहीं से गोले बरसाये। 17 मार्च 1695 ई0 को हरीसिंह की माताजी का स्वर्गवास हो गया। उसके बाद जाट शक्ति एवं कछवाहों में छुटपुट संघर्ष चलता रहा। 5 अप्रैल 1695 ई0 को हरीसिंह खांगरोत किले में प्रवेश करने हेतु अपने सैनिकों को उत्साहित कर रहा था कि एक तोप के गोले से उसकी मृत्यु हो गयी।[78]

अन्ततः ब्रज प्रदेश का जाट शक्ति का संघर्ष हरीसिंह खांगरोत की मृत्यु के पश्चात भी अनेकानेक स्थानों पर औरंगजेब की मृत्युपर्यन्त किसी न किसी रूप में चलता रहा तथा भरतपुर राजघराने के रूप में परणिती की प्राप्त हुआ।

सन्दर्भ–

1. यू0एन0शर्मा : जाटों का नवीन इतिहास, पृ0 143,144।
2. अलीगढ़ के उत्तर पूर्व में सोलह मील।
3. खैर के पूर्व में आठ मील।
4. कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ दी बोरोनिकल हाउस ऑफ डिगी, पृ0 91–94।
5. उपरोक्त : पृ0 97,98। मुन्शी देवी प्रसाद : औरंगजेबनामा, भाग–3, पृ0 75।
6. सिनसिनी के दक्षिण में लगभग 23 मील भरतपुर के दक्षिण में 14 मील, पश्चिम रेलवे मार्ग पर, अबार के दक्षिण पश्चिम में 18 मील।
7. अलवर जिले की एक तहसील।
8. अबार के दक्षिण में चार मील।
9. अबार से पूर्व से 6 मील।
10. कसौट के दक्षिण में 6 मील तथा कुम्हेर के पश्चिम में 7 मील।
11. बलदेव सिंह : फारसी पाण्डुलिपि, पृ0 16।
    कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ दी बोरोनिकल हाउस ऑफ डिगी, पृ0 99।
12. सरकार : औरंगजेब, भाग–5, पृ0 302। मथुरालाल : हिस्ट्री ऑफ जयपुर, पृ0 153।
    कानूनगो : जाटों का इतिहास, पृ0 25। कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ दी बोरोनिकल हाउस ऑफ डिगी, पृ0 101, 102।
13. मुन्शी देवी प्रसाद : औरंगजेबनामा, भाग–3, पृ0 82।
14. कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ दी बोरोनिकल हाउस ऑफ डिगी, पृ0 103।
15. कठूमर के उत्तर में 19 मील, इन्दौली कठूमर के उत्तर में 4 मील तथा बरोडा के उत्तर पूर्व में चार मील।
16. कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ दी बोरोनिकल हाउस ऑफ डिगी, पृ0 98।
17. यह काबुल का 3500 जात का मनसबदार था, इसने अफगानों को कुचलने में विशेष ख्याति प्राप्त की थी। इसलिये औरंगजेब ने इस योग्य मनसबदार को दक्षिण के युद्ध में भाग लेने के लिये 1690 ई0 में आदेश दिया।
18. मासिर उल उमरा : न0प्र0, भाग–2, पृ0 3। मासिर उल उमरा : (बं0) पृ0 155 के अनुसार यह घटना 1691 ई0 में घटित हुई थी इसलिये समकालीन लेखकों का मत तथा समय उपयुक्त है। जबकि आधुनिक इतिहासकार यह घटना राजाराम के समय की मानते हैं– सरकार : औरंगजेब, भाग–5, पृ0 298। विद्यावाचस्पति : साम्राज्य का छय और उसके कारण, पृ0 274। कानूनगो : जाटों का इतिहास, पृ0 23।
19. उपरोक्त : पृ0 23। यू0एन0 शर्मा : जाटों का नवीन इतिहास, पृ0 156,157।
20. कानूनगो : जाटों का इतिहास, पृ0 157। मुन्शी देवी प्रसाद : औरंगजेबनामा, भाग–3, पृ0 86, 87।

21. उपरोक्त : पृ0 105।
22. मुन्शी देवी प्रसाद : औरंगजेबनामा, भाग–3, पृ0 84।
23. उपरोक्त : पृ0 86।
24. पिंगोरा के उत्तर में 10 मील।
25. कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ दी बोरोनिकल हाउस ऑफ डिगी, पृ0 107,108।
26. भटावली के उत्तर पश्चिम में 10 मील और थून के दक्षिण पूर्व में 4 मील।
27. कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ दी बोरोनिकल हाउस ऑफ डिगी, पृ0 107।
28. नदवई के उत्तर में चार मील सौंख के दक्षिण में 12 मील।
29. भटावली के पूर्व में 1 मील।
30. कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ दी बोरोनिकल हाउस ऑफ डिगी, पृ0 108।
31. उपरोक्त : पृ0 110–113।
32. गढ़ी केसरा के पश्चिम में लगभग 6 मील। तहसील कठूमर का एक गॉव। मुगलकाल में यह परगना था।
33. कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ दी बोरोनिकल हाउस ऑफ डिगी, पृ0 116–117।
34. भुसावर के उत्तर पश्चिम में 6 मील। महुआ के उत्तर पश्चिम में 6 मील।
35. झहारोटी के पूर्व में 10 मील। महुआ के उत्तर पूर्व में 10 मील।
36. कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ दी बोरोनिकल हाउस ऑफ डिगी, पृ0 117–121।
37. भरतपुर के उत्तर पूर्व में है।
38. कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ दी बोरोनिकल हाउस ऑफ डिगी, पृ0 121।
39. बैर के दक्षिण में 4 मील। भुसावर के दक्षिण में 7 मील। पहाडियों के मध्य में।
40. कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ दी बोरोनिकल हाउस ऑफ डिगी, पृ0 123।
41. फतेहपुर सीकरी के दक्षिण के पूर्व में 16 मील। बसेडी के उत्तर में 10 मील। बयाना के पूर्व में 20 मील।
42. भरतपुर के पूर्व में 10 मील, फतेहपुरसीकरी के उत्तर में 8 मील।
43. फतेहपुर सीकरी के दक्षिण में 8 मील, रूपबास के उत्तर में 4 मील। तहसील रूपवास के अन्तर्गत।
44. कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ दी बोरोनिकल हाउस ऑफ डिगी, पृ0 125।
45. चैकोरा के उत्तर पूर्व में 7 मील।
46. दूरा के उत्तर में 2 मील।
47. चैकोरा के पूर्व में 12 मील। आगरा के दक्षिण पश्चिम में 16 मील।
48. रूपवास के पश्चिम में 1 मील। चैकोरा के दक्षिण पश्चिम में 7 मील।
49. रूपवास के दक्षिण में 11 मील।
50. कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ दी बोरोनिकल हाउस ऑफ डिगी, पृ0 127–129।
51. चैकोरा के पश्चिम में 18 मील।
52. कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ दी बोरोनिकल हाउस ऑफ डिगी, पृ0 132।
53. उपरोक्त :
54. खानवा के पश्चिम में 4 मील।
55. आगरा कैन्ट के दक्षिण पश्चिम में 6 मील।
56. कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ दी बोरोनिकल हाउस ऑफ डिगी, पृ0 133।
57. भरतपुर के पूर्व में 4 मील।
58. बछामदी के पूर्व में 3 मील।
59. उन्देरा के दक्षिण में 1 मील। भरतपुर के पूर्व में 10 मील। भरतपुर आगरा राष्ट्रीय राजमार्ग पर।
60. उन्देरा के उत्तर पूर्व में 12 मील। मीकाण्डा के उत्तर पूर्व में 20 मील। आगरा मथुरा के राष्ट्रीय राजमार्ग पर।
61. उन्देरा के उत्तर में 8 मील। फरहे के पश्चिम मं 10 मील।
62. कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ दी बोरोनिकल हाउस ऑफ डिगी, पृ0 134।
63. सरमथुरा के दक्षिण पश्चिम में 4 मील। बडगॉव मे पूर्व में 7 मील।

64. जगनेर के पश्चिम में 3 मील।
65. जगनेर के पश्चिम में 8 मील।
66. गोंगाबाद के उत्तर पूर्व में 6 मील।
67. कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ दी बोरोनिकल हाउस ऑफ डिगी, पृ0 135–137।
68. उपरोक्त पृ0 137–138।
69. इनके 14 पुत्र अथवा अनेकों पोत्र थे।
70. मुरसान के उत्तर पूर्व में 2 मील।
71. महावन के उत्तर में 6 मील।
72. किहरारी के उत्तर में 2 मील।
73. जगसेना के उत्तर मं 2 मील।
74. महावन के दक्षिण में 3 मील।
75. जलेसर के उत्तर पूर्व में 6 मील। जावरा के दक्षिण में 40 मील।
76. कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ दी वोरोनिकल ऑफ डिगी, पृ0 140–142।
77. महावन के उत्तर में 10 मील।
78. कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ दी बोरोनिकल हाउस ऑफ डिगी, पृ0 143–147।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. डॉ जदुनाथ सरकार : मिलिट्री हिस्ट्री ऑफ इण्डिया।
2. मुंशी देवी प्रसाद : अनुवाद, एच बेबरीज और बी0 प्रसाद।
3. उपेन्द्र नाथ शर्मा : जाटों का नवीन इतिहास, मंगल प्रकाशन, जयपुर, 1977।
4. एफ0 एस0 ग्राउस : मथुरा मोमॉयर्स, ए डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, 1873 ई0।
5. कालिका रंजन कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ जाट्स, 1925 ई0।
6. कालिका रंजन कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ दि बारोनिकल हाउस ऑफ डिग्गी।
7. कालिका रंजन कानूनगो : जाटों का इतिहास, मयूर पेपर बैंक्स, दिल्ली, 1996।
8. कृष्ण दत्त वाजपेयी : ब्रज का इतिहास, अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा, संवत 2011।
9. देशराज शर्मा : जाट इतिहास।
10. बल्देव सिंह : तबारीख भरतपुर।
11. प्रभुदयाल मीतल : ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास, राजकमल प्रकाशन, पटना, 1966।
12. डॉ0 सरकार जदुनाथ : हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब, भाग 1–5, 1925,1925,1928,1930,1924, कलकत्ता।
13. डॉ0 सरकार जदुनाथ : फॉल ऑफ दी मुगल एम्पायर, भाग 2, हिन्दी अनुवाद, मुगल साम्राज्य का पतन, भाग 2, अनुवादक, डॉ0 मथुरा लाल शर्मा।
14. डॉ0 सरकार जदुनाथ : मुगल एडमिनिस्ट्रेश्न, कलकत्ता, 1920।
15. डॉ धर्मचन्द विद्यालंकार : जाटों का नया इतिहास।

डॉ. नीरज कुमार गौड़
(प्राचार्य) एच के एल कालेज ऑफ ऐजूकेशन,
(सम्बध्द पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़) गुरूहरसहाय, फिरोजपुर. (पंजाब)